बेहतर उपस्थिति के नए प्रयोग

INNOVATION CODE - JHK/18/05

हमारे देश के सरकारी विद्यालयों में कक्षा अनुपस्थिति हमेशा से एक चुनौती रही है। विद्यालय में नामांकित होने के बावजूद कई छात्र विभिन्न कारणों से कक्षा में उपस्थित नहीं होते। यह बच्चे पाठ्यक्रम के विषय तो दूर, मूलभूत सिद्धांत भी ठीक से समझ नहीं पाते। इसका असर न सिर्फ उनके व्यक्तिगत बल्कि विद्यालय के शैक्षिक परिणामों पर भी पड़ता है। धीरे–धीरे पढ़ाई में पिछड़ने के कारण उनका मन विद्यालय से कटने लगता है। या तो वह पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं या फिर उनके अभिभावक उनका दाखिला किसी प्राइवेट शैक्षिक संस्थान में करा देते हैं। इस प्रवृत्ति को बदलने के लिए 'बेहतर उपस्थिति के नए प्रयोग' एक सफल नवाचार है, जो कि छात्र केंद्रित शिक्षण पर आधारित है। इससे छात्रों को प्रतिदिन विद्यालय आने की प्रेरणा तो मिलती ही है, उनका मन पढ़ाई से भटकता नहीं। सभी गतिविधियों का उद्देश्य छात्रों के लिए विद्यालय से बाहर भी सहयोगात्मक ढांचें का निर्माण करना है।

नवाचारी शिक्षकों के नाम

1. शिब शंकर पोलाई, उत्क्रमित मध्य विद्यालय खेजुरिया, ईस्ट सिंहभूम
2. सोहराय रविदास, उत्क्रमित मध्य विद्यालय कंजगी, रामगढ़
3. नसरीन अखतर, रा० कन्या मध्य विद्यालय लारी, रामगढ़
4. सत्यवान साहु, राजकीय प्राथमिक विद्यालय वनजोगा, सिमडेगा
5. अरुण कुमार सिंह, राजकीय उत्क्रमित उच्च विद्यालय सिकरियाटांड़, सिमडेगा

नवाचार के लाभ

- विद्यालय में ठहराव और नामांकन दर में सुधार होता है।
- छात्रों एवं अभिभावकों के मन में विद्यालय के प्रति लगाव बढ़ता है।
- शिक्षक छात्रों की अनुपस्थिति के कारण जानने और उनका उपाय करने में सक्षम बनते हैं।
- छात्रों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का भाव उत्पन्न होता है जिससे उन्हें बेहतर शैक्षिक परिणाम प्राप्त होते हैं।

प्रभाव क्षेत्र – नामांकन/उपस्थिति दर में बढ़ोतरी और विद्यालय छोड़ने की दर में कमी

नवाचार का सार

छात्रों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक इस नवाचार का उपयोग करते हैं। प्रस्तुत विभिन्न गतिविधियों का केंद्र सम्मान और पुरस्कार के द्वारा छात्रों को विद्यालय आने के लिए अग्रसर करना है। छात्र व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास करने के लिए उत्साहित होते हैं। साथ ही, उनके मित्र और अभिभावक भी मदद करने के लिए प्रेरित होते हैं। विद्यालय के भीतर और बाहर छात्रों के लिए परस्पर सहयोग का वातावरण सुनिश्चित होता है। इन गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए किसी विशेष टी.एल.एम की आवश्यकता नहीं है, सुनियोजित योजना के साथ कार्य करना होता है। नवाचार का परिणाम प्राप्त करने के लिए निरंतर कम से कम 6 महीने प्रयत्न करना पड़ता हैं।

विभिन्न गतिविधियां

1. जोड़ी बनाओ

संक्षिप्त परिचयः अक्सर देखा गया है कि बच्चे अपने शिक्षक या अभिभावक की बजाए मित्रों और सहपाठियों की बातों को अधिक महत्व देते हैं। बच्चों की इस स्वभाविक प्रवृति को आधार बनाकर, 'जोड़ी बनाओ' गतिविधि को विकसित किया गया है। इसमें छात्र की ऐसे सहपाठी से जोड़ी बना दी जाती है उसके टोले (बस्ती मोहल्ले) से हो या उसका घनिष्ठ मित्र हो, पड़ोस या गली मोहल्ले से हो। फिर दोनों को एक–दूसरे की कक्षा उपस्थिति की जिम्मेदारी सौंप दी जाती है।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः छात्रों को उनके मित्रों और सहपाठियों से प्रतिदिन विद्यालय आने के लिए परस्पर सहयोग मिलता है। इससे न सिर्फ कक्षा उपस्थिति में सुधार होता है, छात्रों के अधिगम स्तर और विद्यालय के शैक्षिक परिणामों में भी वृद्धि होती है।

योजनाः शिक्षक छात्रों को प्रतिदिन विद्यालय आने के महत्व से अवगत कराते हैं। उसके बाद कक्षा में पढ़ने वाले छात्रों को उनके टोले (बस्ती/ मोहल्ले) के आधार पर समूह में बांट देते हैं। गठित समूह में से छात्रों की एक दूसरे से मित्रता और घनिष्ठता एवं उनके एक ही टोले (गली, आसपड़ोस) को ध्यान में रखते हुए जोड़ी बना दी जाती है।

क्रियान्वयनः छात्रों की जोड़ी बनाने के बाद, उन्हें निम्नलिखित माध्यमों से एक दूसरे का सहयोग करने के लिए कहा जाता है। प्रत्येक सुबह, जोड़ीदार मित्र एक दूसरे को घर से साथ लेते हुए विद्यालय पहुंचते हैं।

- यदि जोड़ी में से एक छात्र विद्यालय साथ नहीं आता, तो दूसरा छात्र विद्यालय पहुंचने से पहले जोड़ीदार की अनुपस्थिति का कारण जानने के लिए उसके घर जाता है।
- कक्षा में उपस्थित छात्र अपने अनुपस्थित जोड़ीदार के न आने का कारण शिक्षक को बताता है।
- विद्यालय अवकाश के बाद, कक्षा में उपस्थित छात्र अनुपस्थित छात्र के घर उसे कक्षा–कार्य और गृह–कार्य बताने जाता है। इस प्रकार, जोड़ीदार एक दूसरे को विद्यालय आने के लिए अग्रसर करने और शैक्षिक कार्य पूर्ण करने में सहयोग करते हैं।

2. पगड़ी पहनाओ

संक्षिप्त परिचयः कक्षा में छात्रों की नियमित उपस्थिति का श्रेय शिक्षक के साथ–साथ अभिभावक को भी जाता है। इस गतिविधि में शैक्षिक वर्ष पूर्ण होने पर जिन छात्रों की उपस्थिति 100 प्रतिशत या सर्वाधिक रहती है उनके अभिभावकों को विद्यालय में सम्मानित किया जाता है।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः छात्र और अभिभावक कक्षा उपस्थिति के महत्व को समझने लगते हैं। नियमित रूप से विद्यालय आने के लिए छात्रों को घर पर भी सहयोगी वातावरण मिलने लगता है। अभिभावक सम्मान और सत्कार पाकर, अपने दायित्व का निर्वहन अधिक समर्पण के साथ करने लगते हैं।

योजनाः सबसे पहले शिक्षक छात्रों को इस गतिविधि से

अवगत कराते हैं। शिक्षक छात्रों को सूचित करते हैं कि जिन छात्रों की उपस्थिति सर्वाधिक होगी, उनके अभिभावकों को शैक्षिक वर्ष संपन्न होने पर कार्यक्रम में सम्मानित किया जाएगा। यह सूचना शिक्षक शैक्षिक वर्ष के आरंभ में या फिर नवाचार के क्रियान्वयन के समय दे सकते हैं। उसके उपरांत, शैक्षिक वर्ष की समाप्ति पर किसी आयोजन में, या फिर परिणाम घोषित करते हुए, या फिर पी.टी.एम में शिक्षक चयनित अभिभावकों को सम्मानित करते हैं।

क्रियान्वयनः

◆ शैक्षिक वर्ष पूर्ण होने पर शिक्षक एक कार्यक्रम आयोजित कर सभी अभिभावकों को आमंत्रित करते हैं। इसके लिए छात्र अभिभावकों के लिए सुंदर निमंत्रण पत्र तैयार करते हैं।

◆ शिक्षक सुनिश्चित करते हैं कि जिन छात्रों की सर्वाधिक उपस्थिति रही है, उनके अभिभावक कार्यक्रम में अवश्य शामिल हों।

◆ सर्वाधिक उपस्थिति वाले छात्रों और उनके अभिभावकों के नाम विद्यालय के सूचना बोर्ड पर लिखे जाते हैं। कार्यक्रम में चयनित छात्रों और अभिभावकों को मंच पर आमंत्रित करके, अभिभावकों को सम्मानित किया जाता है।

◆ सम्मान स्वरूप शिक्षक अभिभावकों को पगड़ी पहना. कर, छात्रों द्वारा बनाई गई फूलों की माला और स्मृति चिन्ह भेंट करते हैं।

3. रोज आओ, रिबन से सज जाओ

संक्षिप्त परिचयः यह गतिविधि कक्षा उपस्थिति को शैक्षिक और सह–शैक्षिक क्रियाओं के साथ जोड़ती है। छात्रों को व्यक्तिगत स्तर पर प्रोत्साहित करने के लिए, उनके बीच एक रोचक और मनोरंजक प्रतिस्पर्धा विकसित की जाती है। शिक्षक प्रति माह छात्रों को उनकी उपस्थिति दर के आधार पर निर्धारित रंग के रिबन प्रदान करते हैं। प्राप्त रिबन के रंग को ध्यान में रखते हुए छात्रों को कक्षा की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिलता है।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः कक्षा उपस्थिति दर में सुधार से शैक्षिक वातावरण को बल मिलता है। छात्र स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ शैक्षिक और सह–शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए अग्रसर होते हैं।

योजनाः

◆ शिक्षक उपस्थिति दर के आधार पर विभिन्न रंगों के रिबन निर्धारित करते हैं। जैसे कि, 80–100 प्रतिशत उपस्थिति होने पर छात्रों को हरे रंग का रिबन दिया जाता है। 60 से 80 प्रतिशत उपस्थित दर पर नीला, 40–60 प्रतिशत उपस्थित पर पीला और 40 प्रतिशत से कम उपस्थित रहने वाले छात्रों को लाल रंग का रिबन दिया जाता है।

◆ शिक्षक प्रतिदिन होने वाले कक्षा और विद्यालय संबंधी गतिविधियों की एक सूची तैयार करते हैं। जैसे कि, कक्षा स्तर पर होने वाली गतिविधियों के उदाहरण हैं– कक्षा नियंत्रण, कक्षा में विषय विवरण देना, गृह कार्य न करने वाले छात्रों को नाम दर्ज करना, ब्लैकबोर्ड साफ करना, छात्रों की स्वच्छता और नाखून चेक करना इत्यादि। विद्यालय स्तर पर होने वाली गतिविधियों के उदाहरण हैं– बाल संसद का चुनाव, प्रार्थना सभा का संचालन और कार्यक्रमों का आयोजन इत्यादि।

◆ छात्रों की प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षक विभिन्न गतिविधियों को श्रेणियों में बांट देते हैं। जैसे कि छात्रों की सबसे पहली प्राथमिकता हो सकती है कक्षा नियंत्रण और बाल संसद का चुनाव। दूसरी प्राथमिकता हो सकती है छात्रों को स्वच्छता जांच और राष्ट्रीय पर्व (उदाहरण 15 अगस्त) पर नेतृत्व भूमिका निभाना। तीसरी

प्राथमिकता हो सकती है ब्लैक बोर्ड साफ करना, कूड़ा फैलाने वाले छात्रों के नाम दर्ज करना और प्रार्थना सभा में प्रस्तुति देना। चौथी प्राथमिकता हो सकती है अन्य छात्रों को नेतृत्व में सहयोग देना।

क्रियान्वयनः

- प्रत्येक महीने के अंत में, छात्रों को उनकी उपस्थिति दर के आधार पर रिबन दिये जाते हैं।
- प्रतिमाह छात्रों का लक्ष्य होता है कि उनकी उपस्थिति सर्वाधिक रहे और उन्हें हरे रंग का रिबन प्राप्त हो, जिसे वे पूरे महीने अपनी कमीज पर पिन लगाकर पहनते हैं।
- विशेष बात यह है जिन छात्रों को हरें रंग का रिबन प्राप्त होता है, उन्हें पहली प्राथमिकता के अंतर्गत आने वाली गतिविधियों में सहभागी बनने का अवसर मिलता है।
- इसी प्रकार, प्राप्त रिबन के रंग के आधार पर उन्हें दूसरी, तीसरी और चौथी प्राथमिकता में हिस्सा लेने का मौका मिलता है। शत प्रतिशत उपस्थिति वाले छात्रों को पुरस्कृत भी किया जाता है। इस गतिविधि से छात्रों के बीच उच्च श्रेणी के रिबन और गतिविधियों में भाग लेने की स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा भी मिलता है।

4. स्कूल चला छात्रों के पास

संक्षिप्त परिचयः जब छात्र कक्षा से लगातार अनुपस्थित रहते हैं, तो अक्सर उसके पीछे कोई गंभीर कारण होता है। वजह अभिभावकों के सहयोग में कमी, गलत संगति का दुष्प्रभाव, शारीरिक या मानसिक अस्वस्थता या फिर शिक्षा के प्रति उन्मुखीकरण में कमी हो सकती है। इन चुनौतियों को पार करने के लिए 'स्कूल चला छात्रों के पास', एक अनोखा माध्यम है विद्यालय से अनुपस्थित छात्रों को विद्यालय वापस लेकर आने का।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः यह गतिविधि शिक्षकों को अनुपस्थित छात्रों को विद्यालय में वापस लाने और उपस्थित छात्रों को पढ़ाने के बीच तालमेल बिठाने एवं समय प्रबंधन में सहायक है। अनुपस्थित रहने वाले छात्र कक्षा–कार्य के साथ जुड़ते हैं। विद्यालय से बाहर, शिक्षक छात्रों को सामाजिक, जीव–विज्ञान, विज्ञान, इतिहास इत्यादि विषयों को प्रासंगिक और रोचक रूप से पढ़ा सकते हैं।

योजनाः शिक्षक अनुपस्थित रहने वाले छात्रों की तीन श्रेणियां बनाते हैं। पहली– ऐसे छात्र जो शिक्षक को सूचना देकर, कक्षा से अनुपस्थित रहते हैं। दूसरी– ऐसे छात्र जो बिना सूचना दिए अनुपस्थित रहते हैं। तीसरी– ऐसे छात्र जो लगातार 10 दिन से अधिक, बिना सूचना दिए अनुपस्थित रहते हैं।

क्रियान्वयनः शिक्षक नियमित रूप से टोले (पोषक क्षेत्र) का भ्रमण करते हैं। कक्षा से अनुपस्थित और उपस्थित रहने वाले छात्रों के घर जाकर अभिभावकों के साथ सम्बंध स्थापित करते हैं। यदि देखा जाता है कि शिक्षा के प्रति उदासीनता के कारण अभिभावक अपने बच्चों को पशुपालन, खेत–खलिहान के कार्यों, घर के कार्यों में व्यस्त कर लेते हैं। ऐसी स्थिति में अभिभावकों को शिक्षा के महत्व के प्रति जाग्रत किया जाऐ, तो वह दायित्व को समझते हुए अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने के लिए अग्रसर होंगे। इस गतिविधि का महत्वपूर्ण और प्रभावशाली पक्ष यह है कि–

- शिक्षक कक्षा में उपस्थित रहने वाले छात्रों के साथ स्थानीय टोले (खेत खलिहान, नदी, खाली मैदान इत्यादि) का भ्रमण करते हैं।
- जो छात्र कक्षा से अनुपस्थित होकर इन स्थानों पर कार्य करते हुए या खेलते हुए दिखते हैं, शिक्षक उन्हें साथ लेकर उसी स्थान पर सभी छात्रों को पढ़ाने लगते हैं। पाठ पढ़ाने के बाद, शिक्षक सभी छात्रों को लेकर विद्यालय लौट आते हैं।
- इन छात्रों में वह बच्चे भी शामिल होते हैं जो पहले कक्षा से अनुपस्थित थे। धीरे–धीरे उपस्थित रहने वाले छात्रों से प्रेरित होकर, सभी छात्र कक्षा में मौजूद रहना शुरु कर देते हैं। ■